

## 26879 - इफ्तार के समय रोज़ेदार की दुआ

### प्रश्न

जब हम रोज़ेदार हों तो रोज़ा खोलते समय कौन सी दुआ पढ़ें ?

### विस्तृत उत्तर

उमर रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि : "अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब रोज़ा खोलते थे तो यह दुआ पढ़ते थे:

«ذَهَبَ الظُّمَرُ وَابْتَلَتِ الْعُرُوقُ، وَتَبَّتِ الأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى»

"ज़ाहा-बज़्ज़मओ वब्बतल्लतिल उरूक्को व सब-तल अज्जो इन शा अल्लाहो तआला"

प्यास चली गई, रों तर होगई और यदि अल्लाह तआला ने चाहा तो पुण्य निश्चित हो गया।

इसे अबू दाऊद (हदीस संख्या : 2357) और दारकुत्ती (हदीस संख्या : 25) ने रिवायत किया है और इब्ने हजर ने "अत-तल्खीसुल हबीर" (2/202) में कहा है कि : "दारकुत्ती ने फरमाया : इसकी इसनाद हसन (अच्छी) है।"

रही बात इस दुआ : "अल्लाहुम्म लका सुम्तो व अला रिज़किका अफतरतो" की, तो इसे अबू दाऊद (हदीस संख्या : 2358) ने रिवायत किया है, और यह एक मुसल हदीस है, इसलिए वह ज़ईफ है। अल्बानी की किताब ज़ईफ अबू दाऊद (हदीस संख्या : 510).

इबादतों के बाद दुआ करने का शरीअत में एक बड़ा आधार है, उदाहरण के तौर पर नमाज़ों के बाद और हज्ज के कार्यों के समापन के बाद दुआ करना, और इन शा अल्लाह रोज़े की इबादत उससे बाहर नहीं है, तथा अल्लाह तआला ने इस महीने में दुआ के महत्व को दर्शाने के लिए, दुआ की आयत और उसकी अभिरूचि दिलाने का वर्णन रोज़े की आयतों के बीच में किया है, और वह अल्लाह तआला का यह फरमान है :

وَإِذَا سَأَلَكَ عَبْدِي عَنِي فَإِنِّي قَرِيبٌ أَجِيبُ دُعَوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلِيَسْتَجِيبُوا لِي وَلِيُؤْمِنُوا بِي لِعَلَّهُمْ يَرْشِدُونَ . [البقرة : 186].

"और जब आप से मेरे बन्दे मेरे बारे में प्रश्न करें तो (आप उन्हें बतला दें कि) मैं बहुत ही निकट हूँ, जब पुकारने वाला मुझे पुकारे तो मैं उसकी दुआ क्रबूल करता हूँ, अतः लोगों को भी चाहिए कि वे मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वे सही मार्ग पाएं।"

(सूरतुल बक़रा : 186).

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या ने फरमाया :

अल्लाह सर्वशक्तिमान ने इस बात की सूचना दी है कि वह अपने बंदों से क़रीब है, पुकारने वाले की दुआ को जब वह उसे पुकारे तो क़बूल करता है, तो यह अल्लाह तआला उन्हें अपनी रूबूबियत की, उनकी मुराद पूरी करने की और उनकी दुआ को क़बूल करने की सूचना दे रहा है ; क्योंकि जब उन्होंने उसे पुकारा तो वास्तव में वे उसकी रूबूबियत पर ईमान रखने वाले हैं . . . फिर अल्लाह ने उन्हें दो आदेश दिए हैं, चुनाँचे फरमाया :

﴿فَلَيَسْتَحِيُّوا لِي وَلَيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشَدُونَ﴾ [البقرة: 173]

“अतः लोगों को भी चाहिए कि वे मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वे सही मार्ग पाएं।” (सूरतुल बक़रा : 186).

प्रथम : अल्लाह ने उन्हें अपनी इबादत करने और उसी से मदद मांगने का जो आदेश दिया है उसमें उसकी आज्ञा का पालन करें।

दूसरा : उसकी रूबूबियत और उसकी उलूहियत पर ईमान लाएं, और यह कि वह उनका रब (पालनहार) और उनका पूज्य है। इसीलिए कहा गया है कि: दुआ की क़बूलियत सही अक्तीदे और संपूर्ण आज्ञाकारिता से होती है क्योंकि अल्लाह तआला ने दुआ की आयत के तत्वपश्चात ही फरमाया है कि : “अतः लोगों को भी चाहिए कि वे मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान लाएं।” “मजमूउल फतावा” (14/33).